

पाठ—21 अज्ञातवास

अज्ञातवास के समय सभी पांडव राजा विराट के यहाँ भेष बदल कर रहे ।

युधिष्ठिर कंक के नाम से, भीम बल्लभ के नाम से, अर्जुन स्त्री के वेश में बृहन्नला नाम से, नकुल ग्रंथिक नाम से और सहदेव तंतिपाल नाम से रहे ।

युधिष्ठिर ने विराट का दरबारी तो भीम ने रसोइए का काम संभाला जबकि अर्जुन ने गायन व नृत्य सिखाने का कार्य किया ।

नकुल ने घोड़ों की देखभाल का तो सहदेव ने गाय—बैलों की देखभाल का काम संभाला जबकि द्रौपदी ने सैरंध्री बनकर रानी सुदेष्णा की सेविका बनकर कार्य संभाला ।

हस्तिनापुर तक जब कीचक के मारे जाने की खबर पहुँची तो दुर्योधन को यह समझते देर नहीं लगी कि पांडव विराट राज के यहाँ छिपे हुए हैं।

दुर्योधन ने राजा सुशर्मा से विचार करकर राजा विराट पर दक्षिण की ओर से आक्रमण कर दिया।

दोनों में भयंकर युद्ध हुआ और भीम ने सुशर्मा को पराजित कर राजा विराट को छुड़ा लिया।

उत्तर की ओर से दुर्योधन ने जब आक्रमण कर दिया तो राजा विराट का पुत्र राजकुमार उत्तर घबरा गया ।

राजकुमार उत्तर के घबराने से बृहन्नला बने अर्जुन ने उसका हौंसला बढ़ाते हुए कहा कि जीत निश्चित ही तुम्हारी ही होगी ।